होली का त्योहार : अग्निशिखाएँ और रंग

गरिमा बोरवणकर द्वारा लिखित

जब शीतऋतु की ठण्ड जाने लगती है और उसके स्थान पर वसन्त की हल्की-हल्की गरमाहट शुरू होती है, तब प्रकृति फूट पड़ती है, अनगिनत रंगों में अपनी सुन्दरता बिखेरने लगती है। पेड़ों की सूखी

टहनियों को सजाती कोमल हरी कोपलों से लेकर सभी रंगों की खिलती हुई नई कलियाँ; पक्षियों की मनमोहक चहचहाहट से लेकर वातावरण में बहती सुगन्धित मन्द हवा—जब आँखें प्रकृति की इस अद्‌भुत सुन्दरता को निहारती हैं, तो हृदय खुशी के गीत गुनगुनाने लगता है और पैर अपने प्रियजनों के साथ खुद-ब-खुद थिरकने लगते हैं।

होली, उत्सव है 'ऋतुराज वसन्त' का जिसे सभी ऋतुओं में राजा माना जाता है! इसे 'वसन्तोत्सव' के नाम से भी जाना जाता है और इसे पूरे भारत में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। दो दिन का यह पर्व हिन्दू पंचांग के अनुसार फाल्गुन पूर्णिमा को शुरू होता है जो ग्रेगोरियन कैलेन्डर के अनुसार फ़रवरी या मार्च का माह है।

फाल्गुन पूर्णिमा को होली पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है। इस रात को 'होलिका दहन' का उत्सव मनाते हैं; ऐसा कहा जाता है कि इस समय राक्षसी होलिका अग्नि में भस्म हो गई थी। जैसा कि पुराणों में बताया गया है, यह कथा है एक भक्त की दृढ़ भक्ति और ऐसी अटूट श्रद्धा-विश्वास की जिसने भगवान के दिव्य संरक्षण को जीत लिया और यह कथा है बुराई पर अच्छाई की विजय की, अवगुणों के विनाश की और धर्मनिष्ठ मनुष्यों के उल्लास व उमंग की।

> दम्भी और बलशाली राक्षसराज हिरण्यकशिपु ने अपनी प्रजा को आदेश दिया कि सभी केवल उसी की पूजा करें। उसके पुत्र, प्रह्लाद ने जो भगवान विष्णु का अनन्य भक्त था, अपने पिता की आज्ञा का पालन करने से मना कर दिया। हिरण्यकशिपु अपने पुत्र द्वारा उसकी आज्ञा की अवहेलना किए जाने पर क्रोध से जलने लगा और उसने कई तरीक़ों से अपने पुत्र की हत्या करने का प्रयास किया। परन्तु अपने परमप्रिय भगवान विष्णु की कृपा से प्रह्लाद हर बार बच जाता।

अन्ततः, हिरण्यकशिपु ने चिता तैयार करने का आदेश दिया। उसकी दुष्ट बहन, होलिका के पास एक ऐसी जादुई चादर थी कि उसे ओढ़ने वाला अग्नि में जलने से बच जाता था। राजा की आज्ञानुसार, होलिका वह चादर ओढ़कर, चिता पर बैठ गई और उसने बालक प्रह्लाद को अपनी गोद में बैठा लिया। चिता जलाई गई। प्रह्लाद दृढ़ता से भगवान विष्णु से प्रार्थना करने लगा।

आग की लपटें ऊँची उठने लगीं, और जिन लोगों को इस दहन का साक्षी बनने की आज्ञा दी गई थी, वे डरे और घबराए इस दृश्य को देखते रहे। जब आग बुझी तो यह देखकर सभी दंग रह गए कि प्रह्लाद को एक खरोच भी नहीं आई थी और होलिका जलकर राख हो गई थी, उसकी मृत्यु हो गई। हवा के एक झोंके ने राक्षसी पर लिपटी चादर को उड़ाकर प्रह्लाद को ओढ़ा दिया था!

'होलिका दहन' की रात्रि पर, लोग पास के एक निश्चित स्थान की साफ़-सफ़ाई करके, वहाँ अलाव जलाते हैं। वे मन्त्रोच्चार करते हैं और नारियल, फूल, हल्दी, अक्षत और अन्य धान्य चढ़ाते हैं। ये अलाव, सभी नकारात्मक शक्तियों के नाश और शुद्धिकरण का प्रतीक है।

'होलिका दहन' के अगले दिन 'धूलिवन्दन' का दिन होता है जिसे रंग खेलकर मनाया जाता है; यह प्रकृति के विविध रंगों को प्रतिबिम्बित करता है। 'धूलिवन्दन' संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं का शब्द है। 'धूलि' का अर्थ है 'धूल' या 'मिट्टी' और 'वन्दन' का अर्थ है 'पूजा-अर्चना।' 'धूलिवन्दन' धरती माँ की पूजा है जो हमें लहलहाती फसलों का आशीर्वाद देती हैं। इस दिन उनकी प्रचुरता का उत्सव मनाया जाता है।

रंग उड़ाकर "होली खेलने" की यह उल्लासपूर्ण परम्परा भगवान श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित शास्त्र श्रीमद्भागवतम् की एक कहानी से प्रेरित है। इस कहानी में बताया है कि भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी प्रिय भक्त राधा और अन्य गोपियों के साथ होली खेली थी, लाल और गुलाबी रंग का गुलाल एक-दूसरे के चेहरे पर लगाया था और उसे एक-दूसरे पर डाला था। आज भी सबसे ज़्यादा उल्लासपूर्ण और शानदार होली मथुरा और वृन्दावन में खेली जाती है—मथुरा जो भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि है और वृन्दावन जहाँ उनका बचपन बीता। वहाँ होली लगभग एक सप्ताह तक खेली जाती है और लोग अलग-अलग दिनों पर राधा-कृष्ण के विभिन्न भव्य मन्दिरों में एकत्र होते हैं। हज़ारों की संख्या में भक्त यहाँ चटकीले रंग और गुलाल खेलने के लिए इकट्ठा होते हैं, वे लोकनृत्य करते हैं और भगवान श्रीकृष्ण से अथाह प्रेम करने वाली गोपियों के साथ हुई श्रीकृष्णलीला के गीत गाते हैं। इन उत्सव मनाने वालों के लिए रंगों में भीगना भगवान का कृपा-प्रसाद पाना है।

'धूलिवन्दन' मज़े और मनोरंजन की इसी भावना से सराबोर होता है। सुबह होते ही, लोग होली खेलने के लिए अपने घरों पर, सड़कों पर और पास के मैदानों में इकट्ठा होने लगते हैं। परम्परागत तौर पर सफ़ेद कपड़े पहने जाते हैं जिससे उन पर रंग साफ़-साफ़ दिखाई दें और वे एक रंग-बिरंगी चादर में बदल जाएँ। हालाँकि, आजकल लोग जैसे चाहे, वैसे कपड़ों में होली खेलते हैं।

"होली है! होली है! बुरा न मानो, होली है!" की गूँज के साथ वे एक-दूसरे पर गुलाल फेंकते हैं और पिचकारियाँ मारते हैं। यह गूँज होली के भाव को दर्शाती है। बिना कहे ही सबमें आपस में यह समझौता होता है कि कोई भी बुरा नहीं मानेगा फिर चाहे उनके साथ होली खेलने वाले अनजान ही क्यों न हों—क्योंकि यह दिन है नाचने और गाने का, उन्मुक्त हर्षोल्लास का और हँसने-खेलने का, हास्य-विनोद और आनन्दमस्ती-मज़ाक का, जब दुर्भावना और मनमुटाव को बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है। हवा में भी खूब सारे चटकीले रंगों की छटाएँ होती हैं—गुलाबी, लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला और बैंगनी। कुछ देर बाद हर एक चेहरा, दूसरे चेहरे जैसा ही दिखने लगता है, बस अलग होती हैं तो चमक से भरी उनकी आँखें और उनकी दमकती मुस्कान जो उस खुशी, उमंग और उत्साह को बयान करती है जिसमें हर एक व्यक्ति और हर वस्तु डूबी होती है।

देश के कई हिस्सों में 'धूलिवन्दन' का त्योहार रंग खेलने के बाद समाप्त हो जाता है। लोग अपने घर वापस आ जाते हैं, स्नान कर नए कपड़े पहनते हैं और अपने परिवार व मित्रों के साथ ख़ास दावत का मज़ा लेते हैं। परन्तु उत्तर भारत में, रात तक उत्सव जारी रहता है। घर पर पकवान खाने के बाद, लोग नाते-रिश्तेदारों और दोस्तों के घर होली मिलने जाते हैं, उन्हें मिठाइयाँ और पकवान देते हैं, नाचते-गाते हैं और एक-दूसरे के साथ होने का पूरा आनन्द उठाते हैं।

होली की कहानी तब तक पूरी नहीं होगी जब तक मैं आपको यह न बता दूँ कि इस त्योहार के बारे में सैकड़ों कहानियाँ और गीत हैं जो आधुनिक बॉलीवुड की फ़िल्मों में फ़िल्माए गए हैं! होली खेलने के बहाने, अनगिनत हीरो को हिरोइन से अपने प्यार का इज़हार करने का बिल्कुल सटीक मौका मिला है, उन्हें नाचकर और गाकर रिझाने का अवसर मिला है। परिवारों के बीच चल रहे कई सारे झगड़े आज के दिन मिट जाते हैं क्योंकि होली के दिन कट्टर दुश्मन भी बीती बातें भूल जाते हैं और एक-दूसरे को माफ़ करके गले लगा लेते हैं, और उन्हें देखने पहुँची जनता चैन की साँस लेती है। होली पर, सख़्त पिता को मनाया जाता है कि वे अपनी बेटी को उससे शादी करने की इजाज़त दे दें जिससे वह प्यार करती है, और इसी तरह होली पर और भी कई सारी कहानियाँ हैं। आप यह भी पूछ सकते हैं : अगर

होली का त्योहार न होता तो बॉलीवुड के लेखक और निर्माता-निर्देशक इतने सारे नाटकीय झगड़े और मनमुटाव आख़िर कैसे सुलझाते? हाँ, पर अच्छा है कि हमें यह सोचना नहीं पड़ेगा!

मुझे यह लेख लिखने में इतना मज़ा आ रहा है कि मेरा मन कर रहा है कि मैं लिखती जाऊँ और होली की महिमा गाती जाऊँ। फिर भी, आपके प्रति—जो मेरे इस लेख को पढ़ रहे हैं—दया का भाव रखते हुए, मैं एक कविता के माध्यम से इस पर्व का सार बताकर समापन करना चाहूँगी जिसे लिखने की मुझे अन्तर-प्रेरणा हो रही है :

बाग़ों का रूप निखर रहा है
हवा में रंग बिखर रहा है
प्यार, सौहार्द, बन्धुत्व-भाव,
इनका आनन चमक रहा है।
बैर-भाव सब मिट जाते हैं
इनकी भीनी खुशबू में
हृदय-दीप जल जाते हैं
इनकी पावन ज्योति में।
सिमटाते हो इन्हें क्यों कर
आख़िर बस इसी एक दिन में?
भीगने दो न क्यों तन-मन
हर दिन इनकी वर्षा में?

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।